टिप्पणी

17

बीती विभावरी जाग री

जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के एक सुप्रसिद्ध कवि हैं जिन्होंने प्रकृति के सौंदर्य पर आधारित अनेक कविताएँ लिखी हैं। उन्होंने प्रकृति को मानव की तरह व्यवहार करते भी दिखाया है। इसी तरह की उनकी एक सुंदर कविता है—'बीती विभावरी जाग री।' आप कविता के उस रूप से खूब परिचित हैं, जिसे सस्वर गाया जाता है। जी हाँ, कविता के इस रूप को 'गीत' कहते हैं। यह कविता भी एक गीत है। इस पाठ में हम उनकी इसी कविता को पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस कविता को पढ़ने के बाद आप –

- कविता का भावार्थ स्पष्ट कर सकेंगे;
- कविता में निहित सौंदर्य-बिंदुओं का विश्लेषण कर सकेंगे;
- काव्यांशों की व्याख्या तथा सराहना कर सकेंगे;
- मनुष्य और प्रकृति के पारस्परिक संबंधों पर सृजनात्मक चिंतन कर उसका उल्लेख कर सकेंगे;
- कविता की भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- रूपक अलंकार की पहचान कर उसका वर्णन सकेंगे।

17.1 मूल पाठ

आइए, हम कविता को एक बार ध्यान से पढ़ लेते हैं।

बीती विभावरी जाग री

बीती विभावरी जाग री।
अंबर-पनघट में डुबो रही—
तारा-घट ऊषा-नागरी।

खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई—
मधु-मुकुल नवल रस गागरी।

अधरों में राग अमंद पिए,
अलकों में मलयज बंद किए,
तू अब तक सोई है आली !
आँखों में भरे विहाग री !

— **जयशंकर प्रसाद**

टिप्पणी

विभावरी – रात्रि
अंबर-पनघट—आकाश रूपी पनघट
तारा-घट—तारे रूपी घड़े
उषा—प्रातःवेला, सुबह
नागरी—स्त्री
खग-कुल—पक्षियों का समूह
कुल-कुल—पक्षियों का कलख/ चहचहाहट
किसलय—कोपलें (नए-नए पत्ते)
लतिका—लता, बेल
मुकुल—अधखिला फूल
नवल—नया
गागरी—गगरी
अधरों—होठों
राग—लगाव, प्रेम-रस, भारतीय शास्त्रीय संगीत में गाने का आधार (राग अनेक प्रकार के होते हैं)
विहाग—एक राग का नाम, जो रात्रि के समय गाया जाता है।
अमंद—कम नहीं होने वाला, जो मंद न हो
अलकों—केशों
मलयज—सुवासित पवन, सुगंधित वायु
आली—सखी

17.2 आइए समझें

यह कविता जयशंकर प्रसाद के काव्य-संग्रह 'लहर' से ली गई है। इस कविता में एक सखी दूसरी को संबोधित करते हुए कह रही है कि प्रकृति अपने समस्त सौंदर्य और संगीत के साथ जाग गई है, तब तुम्हीं क्यों अपने सौंदर्य और माधुर्य को लेकर सो रही हो?

कविता एक अन्य अर्थ की ओर भी संकेत करती है। यह कविता जिन दिनों लिखी गई, उन दिनों भारत में अंग्रेज़ों का राज्य था और आज़ादी के लिए संघर्ष चल रहा था। राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ-साथ कवि-लेखक-रचनाकार भी जन-जागरण के प्रयास कर रहे थे। प्रसाद जी ने अपने नाटकों में भारतवासियों में जागृति लाने के लिए भारत के उस गौरवपूर्ण अतीत का वर्णन किया है, जिसमें लोग अपनी आज़ादी बचाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं। इस कविता में भी हमें यह संकेत दिखाई पड़ता है। अंतिम पक्तियों में अधरों में अमंद राग और केशों में बंद मलयज से इन्हीं बातों का संकेत मिलता है। कवि ने आह्वान किया है कि सभी सामर्थ्य होते हुए भी सोए रहने का क्या मतलब, जबकि सारे संसार में हलचल हो रही है? तो फिर सोओ मत, जागो।

17.2.1 अंश-1

आइए, इन पंक्तियों का अर्थ-सौंदर्य समझने से पहले कुछ बातें जान लें—

टिप्पणी

- आप जानते ही होंगे कि पहले अधिकांश गाँवों में पानी लेने के लिए घर से दूर कुएँ, नदी, तालाब आदि तक जाना पड़ता था। इधर पौ फटी, सुबह हुई, उधर स्त्रियाँ घड़े लिए पानी भरने को निकलीं। वह स्थान जहाँ स्त्रियाँ पानी भरती हैं, पनघट कहलाता है।

- आपने कभी रात के अंतिम पहर में दिन के उजाले को धीरे-धीरे फैलते देखा है? अभी सूरज निकला नहीं है, पर उजाला होने लगा है (आकाश की कालिमा हल्की होते-होते आसमानी हो गई है, धीमी-धीमी हवा चल रही है) चिड़ियाँ चहचहाने लगी हैं। लोग जाग कर अपना काम शुरू कर रहे हैं। सूरज निकलने से पहले के इस समय को उषा या उषाकाल कहते हैं।

- 'काल' के लिए 'वेला' शब्द का प्रयोग भी होता है, जिसे आम बोल—चाल में बेला भी कहते हैं। 'काल' पुल्लिंग शब्द है और वेला स्त्रीलिंग। चूँकि यहाँ उषा (स्त्रीलिंग) के विषय में बताया गया है, इसलिए 'प्रातःकाल' के स्थान पर 'प्रातःवेला' का प्रयोग अधिक उपयुक्त होगा।

- कविता में अक्सर किसी के सौंदर्य-वर्णन के लिए किसी दूसरी वस्तु से उसकी समानता बताई जाती है। जिसकी समानता बताई जाती है, उसे उपमेय तथा जिससे समानता बताई जाती है, उसे उपमान कहते हैं। अगर उपमेय और उपमान की यह समानता तुलना के रूप में आती है, तो वहाँ उपमा अलंकार होता है। जब दोनों के बीच कोई भेद ही नहीं रहता, तो वहाँ रूपक अलंकार होता है। इन पंक्तियों में अंबर, तारा और उषा से क्रमशः पनघट, घड़ा व नागरी (स्त्री) का इस तरह संबंध स्थापित किया गया है कि उनके बीच कोई भेद ही नहीं रह गया है। इसी को उपमेय में उपमान का आरोप कहते हैं। अगर हम इनकी अलग-अलग सारणी बनाएँ, तो इस तरह होगी :

उपमेय		उपमान
अंबर (आकाश)	–	पनघट
तारा	–	घट (घड़ा)
ऊषा (प्रातःवेला)	–	नागरी (स्त्री)

अब कविता की प्रारंभिक तीन पंक्तियों पर विचार करने से पहले इन्हें एक बार पुनः पढ़ लीजिए।

इन पंक्तियों से एक दृश्य हमारे सामने उभरता है–

एक स्त्री पनघट पर पहुँचकर घड़ा डुबो रही है। स्त्री है–उषा, पनघट है–आकाश, और घड़ा है–तारा। अर्थात् उषा आकाश में, तारों को डुबो रही है। अर्थ हुआ– सुबह हो रही है, आकाश में तारे डूब रहे हैं।

अब हम हाशिए पर दी गई पंक्तियों के अर्थ को उनके सौंदर्य के साथ समझने का प्रयास करते हैं :

बीती विभावरी जाग री!
अंबर-पनघट में डुबो रही–
तारा-घट ऊषा नागरी।

एक सखी दूसरी से कहती है कि हे सखी उठ, अब रात बीत चुकी है और उषा रूपी स्त्री आकाश-रूपी पनघट में तारे रूपी घड़े को डुबो रही है। अर्थ हुआ–उषाकाल हो गया है, आकाश से रात की कालिमा दूर हो गई है और आसमानी रंग दीखने लगा है। आप जानते ही हैं कि पानी का रंग भी आसमानी ही दीखता है। इसीलिए यहाँ आकाश की कल्पना पानी भरने के घाट (पनघट) के रूप में की गई है। आकाश का रंग बदल रहा है और तारों की झिलमिलाहट भी हल्की होते-होते लुप्त होती जा रही है, जैसे घड़ा दीखते-दीखते गुड़ुप से पानी के अंदर डूब जाता है।

इन पंक्तियों का सौंदर्य इस बात में निहित है कि सुबह के दृश्य का वर्णन आम जन-जीवन के कार्यों से जोड़ते हुए किया गया है। सुबह-सुबह नदी, तालाब या कुएँ पर जाकर पानी लाना ग्राम-जीवन में एक आम क्रियाकलाप रहा है।

टिप्पणियाँ

1. इन पंक्तियों में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है अर्थात् प्रकृति को मानव के रूप में व्यवहार करते दिखाया गया है। उदाहरण के लिए भोर के समय उषा के उदय और तारों के छिपने का वर्णन करने के लिए उषा को एक स्त्री माना गया है, जो आकाश रूपी पनघट में तारों के घड़े डुबोती जा रही है।
2. 'अंबर-पनघट....नागरी' में रूपक अलंकार है, क्योंकि अंबर में पनघट का, तारों में घड़ों का और उषा में स्त्री का आरोप किया गया है।
3. प्रातःकालीन मानवीय गतिविधियों के आधार पर सुबह होने के दृश्य का चित्रण सराहनीय है।

क्रियाकलाप–17.1

1. कवि अपने आसपास की घटनाओं को देखकर कुछ नवीन कल्पनाएँ करते हैं। इसे उनका 'सृजन-कौशल' भी कहा जाता है। जैसे इस कविता में आकाश को पनघट

मानकर उसमें तारों को डुबोने की कल्पना, पानी भरती नारी के रूप में उषा को देखना आदि। आप भी चाँदनी रात के बारे में सृजनात्मक चिंतन करते हुए प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण कीजिए :

टिप्पणी

17.2.2 अंश-2

खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई—
मधु-मुकुल नवल रस गागरी।

प्रातःकाल हो गया है, इस तथ्य पर बल देते हुए सखी कहती है कि पक्षियों के कलरव (चहचहाने) का स्वर सुनाई दे रहा है और कोंपल के आँचल में थिरकन हो रही है, अर्थात् धीमी-धीमी हवा से कोंपलें थिरकने लगी हैं। और सुनो, यह लता भी अपने अधखिले फूल रूपी गगरी में नया रस भर लाई है। कली से फूल बनने की प्रक्रिया में अधखिले फूल की आकृति कलश यानी गगरी जैसी होती है और बीच में ताज़ा रस से पूर्ण पराग होता है। अतः यहाँ अधखिले फूल और रस से भरी गगरी की समानता के आधार पर सुंदर रूपक बन पड़ा है। आइए, एक बार फिर से इस अंश के सौंदर्य को देखें।

आपने देखा होगा कि सुबह होते ही पक्षी चहचहाने लग जाते हैं, मंद-मंद हवा बहने लगती है और उससे पेड़-पौधों, फूलों में हलचल पैदा हो जाती है। इसी दृश्य का वर्णन कवि ने इन पंक्तियों में किया है।

पक्षियों के चहचहाने को कलरव कहते हैं—'कल-कल' का रव यानी कल-कल की आवाज़। इसी 'कल-कल' को यहाँ 'कुल-कुल' कहा गया है। कुल का एक और अर्थ होता है समूह। खग-कुल यानी पक्षियों का समूह कुल-कुल-सा बोल रहा है अर्थात् पक्षी कलरव कर रहे हैं।

इतनी-सी बात को कवि ने बड़ी सुंदरता से उपमानों के सहारे व्यक्त किया है। 'कुल-कुल-सा' पर ध्यान दें। उषा नागरी अंबर रूपी पनघट में तारा-घट डुबो रही है। पानी में डुबो कर घड़ा भरते समय जो 'कुल-कुल' की आवाज़ होती है, वह खग-कुल अर्थात् पक्षी-समूह के कलरव से व्यक्त हो रही है। इसलिए कहा है—खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा। घड़ा भरने के बाद उसे कमर पर रखे है लतिका। लतिका नए रस से भरी गागर लेकर चली आ रही है।

टिप्पणियाँ

1. 'लो यह लतिका भी भर लाई......' में लता को उषा के ही समान स्त्री रूप में प्रस्तुत किया गया है, अतः यहाँ **मानवीकरण अलंकार** है।

2. 'मधु-मुकुल नवल रस गागरी' में **रूपक अलंकार** है, क्योंकि मुकुल में (अधखिले फूलों में) रस की छोटी-छोटी गगरियों का आरोप किया गया है।

3. 'खग-कुल कुल-कुल-सा' में 'कुल' की बार-बार आवृत्ति होने से **अनुप्रास अलंकार** है।

   'खग-कुल' में 'कुल' शब्द का अर्थ है- समूह या परिवार और 'कुल-कुल' का अर्थ है- कलरव। जहाँ एक शब्द का एक से अधिक बार प्रयोग हो और हर बार अलग अर्थ हो वहाँ **यमक अलंकार** होता है। इसलिए यहाँ **यमक अलंकार** भी है।

पाठगत प्रश्न-17.1

1. निम्नलिखित कथनों में से सही के आगे (√) और गलत के आगे (X) का निशान लगाइए :

   (क) कविता में भोर के चित्रण के माध्यम से सखी को जागने के लिए कहा गया। ☐

   (ख) सुबह पानी भरने वाली स्त्री है, आकाश घड़ा है और तारा पनघट है। ☐

   (ग) लताओं में लगे अधखिले फूल पराग-रस से भरे कलश हैं। ☐

   (घ) उषा रूपी नागरी सो रही है, कविता में उसे जगाने का प्रयास है। ☐

   (ङ) सखी सोई है, इसलिए उसकी केशराशि ने सुगंधित वायु को बंदी बना रखा है। ☐

2. दूसरे कॉलम के शब्दों का पहले कॉलम के शब्दों से संबंध के आधार पर मिलान कीजिए :

अंबर	घट
तारा	नारी
उषा	पनघट
अधर	विहाग
अलक	राग
आँख	मलयज

17.2.3 अंश-3

आइए, कविता की शेष पंक्तियाँ फिर से पढ़ लेते हैं। प्रातःकाल होने की सूचना देने के साथ-साथ सखी को संबोधित करते हुए कहा गया है कि हे सखी! सुबह हो गई है और सारा संसार अपने क्रिया-व्यापारों में लगा हुआ है, पर तू अपने होठों में कभी मंद न पड़ने वाला राग लिए हुए और अपने केशों में सुगंधित वायु को समेटे तथा आँखों में रात की खुमारी (राग विहाग की ख़ुमारी) लिए अभी तक सोई हुई है। तात्पर्य है कि तेरे होठों पर वह राग (प्रेम) है, जो कभी कम नहीं होता, सुवासित वायु तेरी केशराशि की बंदी है, फिर भी तू अपनी अलसाई आँखें लिए निद्रामग्न है। अगर तू उठे, तो प्रकृति का सौंदर्य मानवीय उमंग और उल्लास से और अधिक निखर उठे।

अधरों में राग अमंद पिए,
अलकों में मलयज बंद किए,
तू अब तक सोई है आली!
आँखों में भरे विहाग री!

'राग' का एक अर्थ प्रेम भी है, इसलिए अर्थ यह भी हो सकता है कि तेरे अधरों पर प्रेम से भरी, कभी हल्की न पड़ने वाली मुस्कान है, दूसरी ओर प्रातःकाल बहने वाली सुगंधित वायु को तुमने अपनी अलकों (केशों) में बाँधा हुआ है। इस प्रकार तुम मानो सुबह के प्रमुख लक्षणों को ही बाँधे हुए हो और अब तक अलसाई हुई सो रही हो। उन्हें मुक्त करो और सुबह होने दो।

टिप्पणियाँ

1. 'राग' का अर्थ संगीत में प्रयुक्त राग भी होता है और 'अनुराग', 'प्रीति', प्रेम आदि भाव भी।
2. 'विहाग' एक राग का नाम है, जो रात्रि में गाया जाता है। 'आँखों में भरे विहाग री' से तात्पर्य है—आँखों में रात की (आलस्य से भरी हुई) ख़ुमारी लिए हुए।

क्रियाकलाप-17.2

आप जानते हैं कि विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। विशेषण जिसकी विशेषता बताते हैं, वे शब्द विशेष्य कहलाते हैं। कविता में विशेषता बताने का तरीका थोड़ा भिन्न होता है। वहाँ यह काम उपमा द्वारा किया जाता है। इसलिए, वहाँ जिससे उपमा दी जाती है, उसे उपमान और जिसके लिए उपमान का प्रयोग किया जाए, उसे उपमेय कहते हैं।

उपमेय और उपमान के इस संबंध को कवि कई रूपों में प्रस्तुत करते हैं। आइए, थोड़ा–सा जानें:

(i) उपमेय की उपमान से तुलना – उपमा अलंकार

पीपर पात सरिस मन डोला
(पीपल के पत्ते **की तरह** मन डोला)

(ii) उपमेय में उपमान की संभावना – उत्प्रेक्षा अलंकार

नील परिधान बीच सुकुमार खिल रहा मृदुल अधखुला अंग
खिला **हो ज्यों** बिजली का फूल मेघ वन बीच गुलाबी रंग

(नीले वस्त्रों के बीच अधखुला कोमल अंग इस प्रकार सुशोभित हो रहा था मानो नीले बादलों के वन में बिजली का गुलाबी फूल खिला हो)

- संभावना को व्यक्त करने वाले शब्द हैं– मनु, मानो, जनु, जानो जैसे आदि।

(iii) उपमेय में उपमान का आरोप

(उपमेय और उपमान का भेद समाप्त होना)– रूपक अलंकार

अंबर-पनघट में डुबो रही **तारा-घट ऊषा-नागरी**।

निम्नलिखित काव्य–पंक्तियों में उपमेय और उपमान का उल्लेख करते हुए अलंकार बताइए :

	काव्य पंक्ति	*उपमेय*	*उपमान*	*अलंकार*
(क)	लट लटकानि मनु मत्त मधुपगन मादक मधुहि पिए	लट	–	–
(ख)	वधु–वसुधा पुलकित अंग–अंग	–	वधु	–
(ग)	घिर रहे थे घुँघराले बाल, अंस अवलंबित मुख के पास नील घन शावक से सुकुमार, सुधा भरने को विधु के पास	–	–	उपमा
(घ)	चरण–कमल बंदौं हरिराई			

17.3 भाव-सौंदर्य

आपने गीत के भावार्थ को तीन अंशों में समझा है। पहला अंश 'बीती... उषा–नागरी' गीत का मुखड़ा है और शेष दोनों अंश – 'खग–कुल.... रस–गागरी' तथा 'अधरों में ...... विहाग री' – गीत के दो बंद हैं। आइए इस गीत के भाव को समग्रता में समझने का प्रयास करते हैं।

दरअसल, इस गीत की पहली पंक्ति सिर्फ़ एक कथन है– 'रात बीत चुकी है, जाग।' आप देखेंगे कि पहले वाक्यांश में प्रकृति है और दूसरे में मनुष्य (यहाँ सखी) के लिए उद्‌बोधन। इस पूरे गीत में प्रकृति और सखी (या आली) की परस्पर स्थिति का अंकन है और सखी को प्रकृति के अनुकूल सक्रिय होने की प्रेरणा। ज़रा बॉक्स में दी गई तुलनात्मक स्थिति पर ध्यान दें। एक ओर प्रकृति है, दूसरी ओर सखी और बीच में तुलना के बिंदु या स्थितियाँ।

प्रकृति		सखी (मनुष्य)
• बीती विभावरी	अंधकार → प्रकाश	जाग री
• अंबर पनघट.... ऊषा–नागरी	निष्क्रियता → सक्रियता	तू अब तक सोई है आली
• खग–कुल... बोल रहा	सन्नाटा → स्वर	अधरों में राग अमंद पिए
• किसलय..... डोल रहा	स्थिरता → गति	अलकों में मलयज बंद किए
• लो यह.... रस–गागरी	रिक्तता → रसमयता	आखों में भरे विहाग री

गीत के पहले बंद में प्रातः वेला का अर्थात् सुबह के सौंदर्य तथा उसकी हलचल का चित्रण है। गीत में किस प्रकार प्रकृति का मानवीकरण किया गया है, यह आप पढ़ ही चुके हैं। इसके साथ–साथ रूपक अलंकार का उपयोग भी कविता को प्रभावशाली बनाता है। हम सब जानते हैं कि प्रकृति की गतिविधियाँ अटल हैं। गीत में सुबह होते ही तारों के आकाश में डूबने, पक्षियों के चहचहाने, मंद–मंद पवन के बहने, लताओं में पुष्पों की रसयुक्तता को बताने के लिए मानवीकरण का उपयोग किया गया है। प्रकृति के ये क्रियाकलाप हमें अंधकार से प्रकाश, निष्क्रियता से सक्रियता, सन्नाटे से स्वर, स्थिरता से गति और रिक्तता से रसमयता की ओर जाने का संदेश देते हैं। दूसरे बंद में आली अर्थात् सखी से यह कहा गया है कि प्रकृति के इस संदेश को जानो और उठो, प्रकृति की तरह तुम भी सक्रिय बनो। तुम्हारी आँखों की खुमारी में जो रसमयता है, अलकों में जो सुगंधित वायु यानी गतिमयता है, अधरों में जो स्वर है– ये सब तुम्हारे सोने के कारण बंदी है, जागकर इन्हें उन्मुक्त करो और जगत में अपनी सक्रियता के सौंदर्य से प्रकाश फैला दो। प्रस्तुत गीत में प्रकृति से प्रेरणा लेने के लिए उद्‌बोधन किया गया है, लेकिन उद्‌बोधन के साथ–साथ प्रकृति और स्त्री के सौंदर्य और इन दोनों के सौंदर्य का संबंध चित्रित है।

17.4 भाषा-सौंदर्य

यह कविता खड़ी बोली में लिखी गई है जो आज हिंदी की मानक भाषा है। इसी भाषा में आज हिंदी के प्रमुख कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार और नाटककार अपना साहित्य रच रहे हैं।

इस कविता में तत्सम शब्दों का बाहुल्य है। यह शुद्ध साहित्यिक भाषा में रची गई है। कवि ने मानवीकरण, रूपक, अनुप्रास और यमक अलंकारों के सार्थक, सहज और प्रभावी प्रयोग से कविता को इतना हृदयग्राही बना दिया है कि संस्कृतनिष्ठ भाषा होने पर भी कहीं दुरूहता और जटिलता नहीं आ पाई है। इसके विपरीत समासयुक्त शब्दों के प्रयोग से अर्थ में गंभीरता आ गई है।

टिप्पणी

कविता में निम्नलिखित अलंकारों का सार्थक और सहज प्रयोग हुआ है–

i) *'अंबर–पनघट में डुबो रही तारा–घट ऊषा–नागरी'* (रूपक अलंकार)

ii) *'खग–कुल कुल–कुल–सा बोल रहा'* (अनुप्रास और यमक अलंकार)

iii) *'मधु–मुकुल नवल रस–गागरी'* (अनुप्रास और रूपक अलंकार)

कविता में अद्‌भुत संगीतात्मकता है, इसलिए इसे गाया जा सकता है, ठीक वैसे ही जैसे आप गाने गाते हैं।

पाठगत प्रश्न-17.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. इस कविता की भाषा

(क) संस्कृतनिष्ठ है	☐	(ख) उर्दू है	☐
(ग) सरल है	☐	(घ) मिली-जुली है	☐

2. कविता में मुख्य रूप से किसके सौंदर्य का वर्णन है?

(क) प्रेयसी के	☐	(ख) पक्षी के	☐
(ग) प्रकृति के	☐	(घ) पनघट के	☐

आपने क्या सीखा

1. 'बीती विभावरी जाग री' भोर के सौंदर्य पर रचित एक कोमल रागात्मक कविता है, जिसमें कवि ने प्रकृति का सुंदर मानवीकरण किया है।
2. कविता में प्रकृति-चित्रण के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण के लिए उद्‌बोधन किया गया है।
3. कविता में कवि ने मानवीकरण, यमक, रूपक और अनुप्रास अलंकारों का अत्यंत सुंदर प्रयोग किया है। 'अंबर-पनघट', 'तारा-घट', 'ऊषा-नागरी', 'मधु-मुकुल नवल रस-गागरी' में रूपक का और 'खग-कुल कुल-कुल-सा' में अनुप्रास तथा यमक का सौंदर्य है। उषा को नागरी के रूप में कार्य करते हुए चित्रित करने से मानवीकरण है।
4. उपमा, उत्प्रेक्षा और रूपक अलंकार की पहचान उपमेय और उपमान के संबंध के आधार पर होती है।

योग्यता-विस्तार

जयशंकर प्रसाद (1889–1937 ई.) का जन्म काशी के प्रसिद्ध सुँघनी साहू परिवार में हुआ। बचपन में ही पिता का देहावसान हो जाने और बहुत-सी विपरीत घरेलू परिस्थितियों के कारण उनकी शिक्षा मुख्यतः घर पर ही हुई। यद्यपि उनका बचपन धन-वैभव के विलासपूर्ण वातावरण में बीता, किंतु बाद में उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई। विविध आर्थिक-पारिवारिक संघर्षों के बीच धैर्यपूर्वक सभी पारिवारिक ज़िम्मेदारियों को निभाते हुए उन्होंने उच्च कोटि के काव्य, नाटक और कथा-साहित्य से हिंदी को समृद्ध किया।

प्रसाद जी पहले ब्रजभाषा में लिखते थे। ब्रजभाषा में रचित उनकी रचनाएँ 'चित्राधार' में संगृहीत हैं। खड़ी बोली में रचित उनकी प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं—'झरना', 'आँसू', 'लहर', और 'कामायनी'। प्रथम कोटि के कवि होने के साथ-साथ प्रसाद जी उच्च कोटि के नाटककार और उपन्यासकार भी थे। 'चंद्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त', ध्रुवस्वामिनी, 'अजातशत्रु' 'जनमेजय का नागयज्ञ' आदि उनके नाटक हैं और प्रमुख उपन्यास है– 'तितली'।

प्रसाद जी ने 'कामायनी' में भी उषा का सुंदर मानवीकरण किया है :

उषा सुनहले तीर बरसती
जयलक्ष्मी–सी उदित हुई
उधर पराजित काल रात्रि भी
जल में अंतर्निहित हुई।

पाठांत प्रश्न

1. इस कविता में 'जाग री' किसके लिए आया है? कवि उसे क्यों जगाना चाहता है?
2. भोर के समय तारों के डूबने और पक्षियों के कलरव को लेकर कवि ने क्या कल्पना की है?
3. नायिका और प्रकृति में कवि क्या देखता है? उसकी सौंदर्य-दृष्टि आपको कितना प्रभावित करती है?
4. 'आँखों में भरे विहाग री' का विश्लेषण करते हुए इसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
5. प्रस्तुत कविता राष्ट्रीय संदर्भ में क्या संकेत करती है? इसके राष्ट्रीय पक्ष को प्रस्तुत कीजिए।
6. अधखिले फूल और रस-भरी गगरी की समानता पर अपने विचार लिखिए।
7. इस कविता में क्या प्रमुख है– प्रकृति-चित्रण या राष्ट्रीय उद्बोधन? तर्क सहित विचार प्रस्तुत कीजिए।

8. निम्नलिखित उदाहरणों में बताइए कि कौन-सा अलंकार है और क्यों?

   (क) चारु चंद्र की चंचल किरणें

   (ख) कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि

   (ग) चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक दिए

   (घ) चरण कमल बंदौं हरिराई

   (ङ) कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
   या खाये बौराय जग वा पाए बौराए।।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

17.1 1. (क) (√) (ख) (×) (ग) (√) (घ) (×) (ङ) (√)

2. अंबर–पनघट, तारा–घट, उषा–नारी, अधर–राग, अलक–मलयज, आँखें–विहाग

17.2 1. (क) 2. (ख)